ऐसे
लड़के
भी
होते हैं

वाणी प्रकाशन

वाणी प्रकाशन, 4695, 21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002

: अशोक राजपथ, पटना, (बिहार)

मूल्य : ₹60

ISBN : 978-93-5000-553-8

संस्करण : 2011

लेखक : आग्नीया बार्तो

अनुवादक : मदनलाल 'मधु'

चित्रकार : व. लोसिन, ये. मोनिन, व. पेर्त्सोव

Aise Ladke bhi hote hain

वोवा बड़ा नकचिढ़ा-सा था
सूरत रहता सदा बनाये।
गुमसुम, त्योरी सदा चढ़ाये
जैसे वह सिरका पी आये ।।

वोवा आया बागीचे में
अलसाया-सा, रूठा-रूठा
नहीं किसी से हाथ मिलाया।
बात न की, न वह मुस्काया।।

हम सब बैठे एक साथ थे
एक तरफ़ को वह जा बैठा।
गेंद न छूता, बात न करता
रोनी सूरत, अकड़ा-ऐंठा ।।

हम सब मिलकर लगे सोचने
सोच-सोच तरकीब निकाली।
वोवा-सी हम सभी बनायें
सूरत अपनी रोनेवाली ।।

अब हम भी सब बाहर आये।
मुँह लटकाये, नाक चढ़ाये ।।

दो साला, नन्ही ल्यूबा ने
बस, नाटक ही कर दिखलाया।
नाक-भौंह को ख़ूब सिकोड़ा
मुँह कुप्पे-सा ख़ूब फुलाया ।।
तब हम सब मिलकर चिल्लाये -
"मुँह तो हमने ख़ूब फुलाये?"
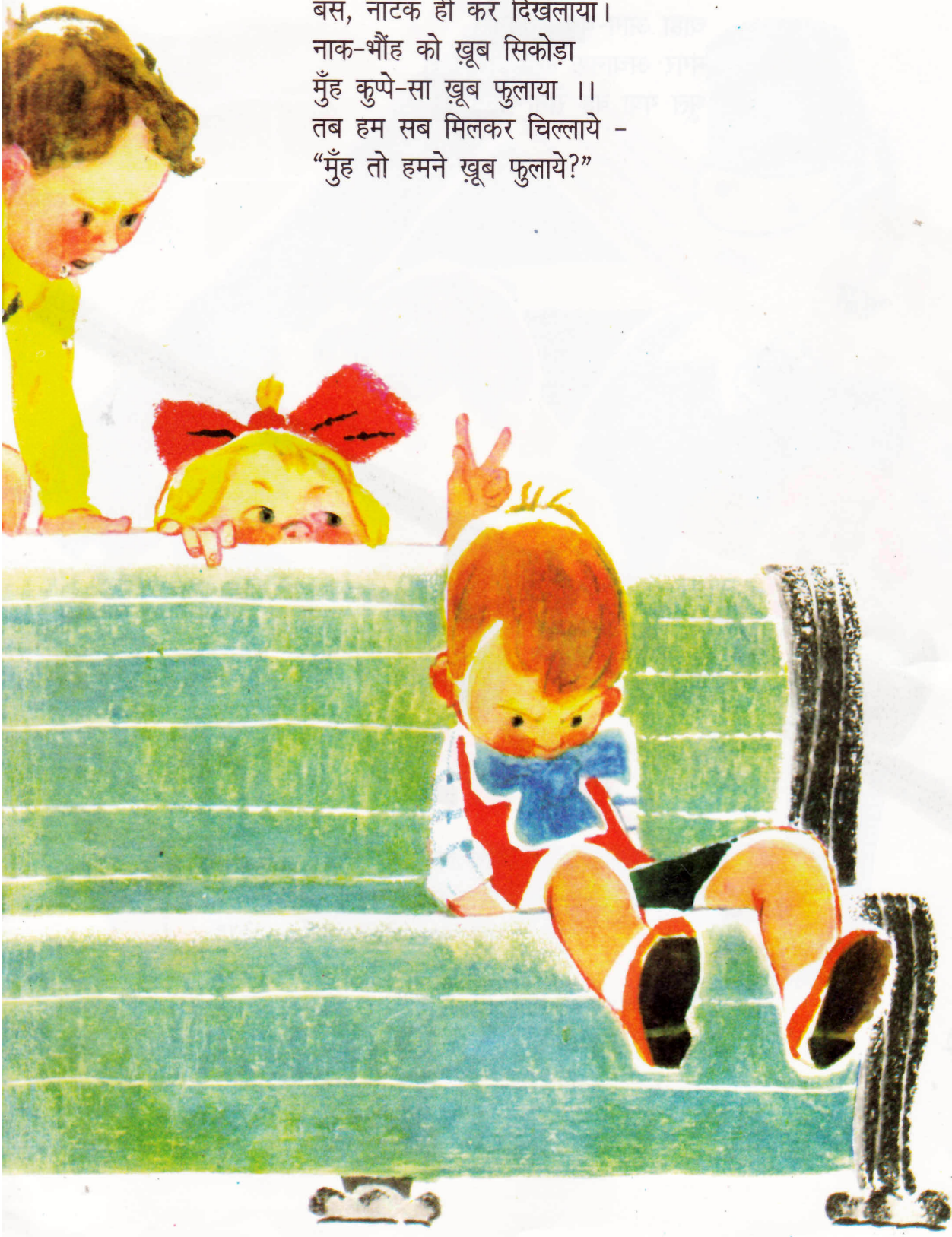
वोवा ने हम सबको देखा
चाहा आग-बबूला होना।
मगर अचानक हँसा जभोर से
भूल गया वह रोना-धोना ।।

हाथ झटककर उसने पूछा□
"क्या मैं लगता हूँ ऐसा ही?
सच, तुम लोगों के जैसा ही?"

हाँ, तुम ऐसे ही लगते हो।
हम दम, ऐसे ही दिखते हो ।।"

"हँसते-हँसते बुरा हाल है
दया करो, मत और हँसाओ।
सूरत ऐसी नहीं बनाओ ।।"
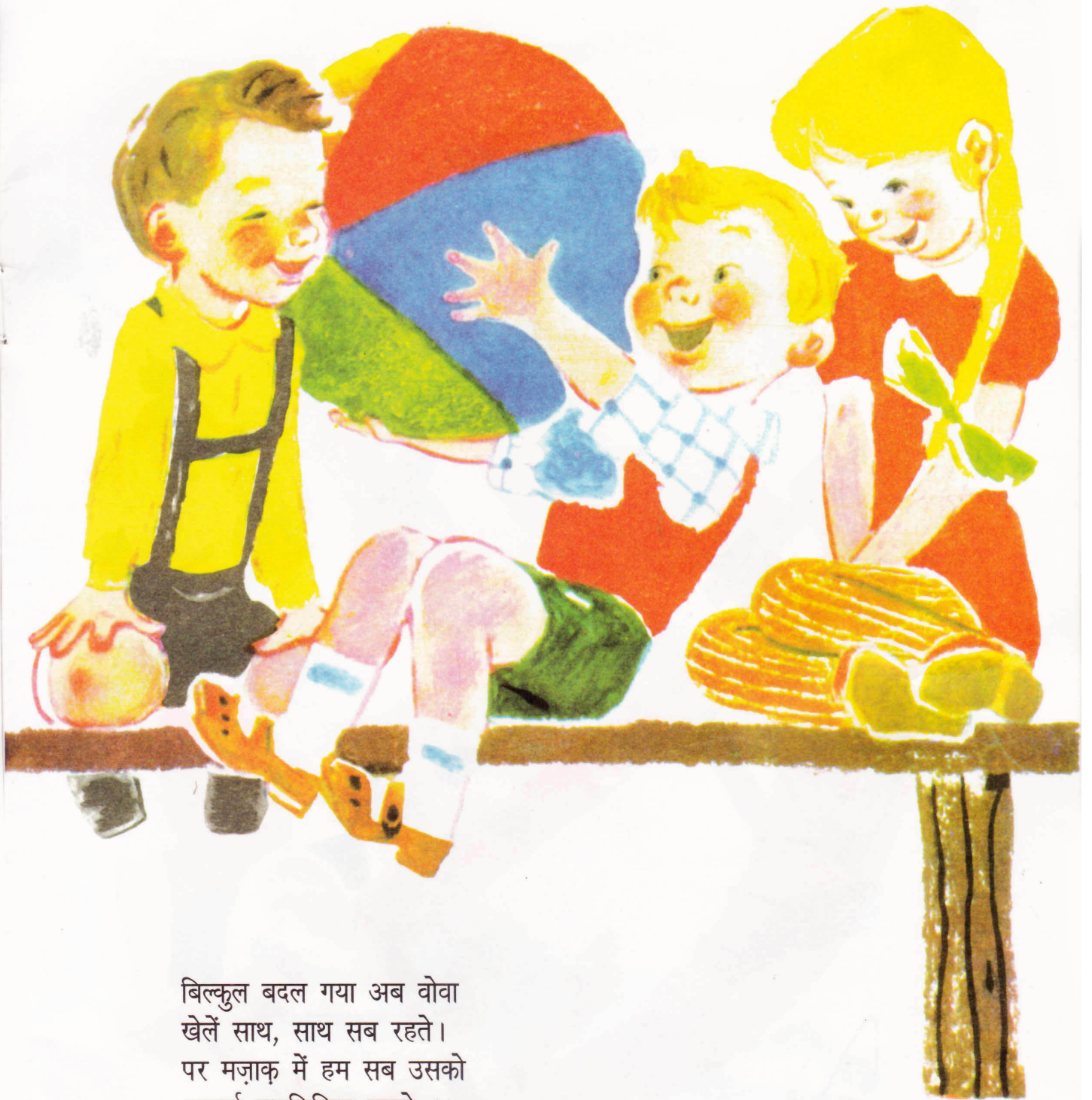
बिल्कुल बदल गया अब वोवा
खेलें साथ, साथ सब रहते।
पर मज़ाक़ में हम सब उसको
भूतपूर्व नकचिढ़िया कहते ।।

अब जब त्योरी ज़रा चढ़ाता।
हमें देख, हँसने लग जाता ।।